विचार बिन्दु

हमेशा याद रखिए कि सफलता के लिए किया गया आपका अपना संकल्प किसी भी और संकल्प से ज्यादा महत्व रखता है। –अब्राहम लिंकन

नई नीतियां, नया दौर : राजस्थान का युवा और बदलती सरकारी सोच

राजस्थान सरकार ने हाल के वर्षों में जिस दृढ संकल्प और दूरदृष्टि के साथ युवा सशक्तिकरण की नीतियाँ तैयार की हैं, वह न केवल राज्य के भविष्य को मजबूत करने वाली है, बल्कि पूरे देश के लिए एक मॉडल प्रस्तुत कर रही है। नई सरकार ने सत्ता संभालते ही युवाओं की बेरोजगारी, कौशल अभाव और सीमित अवसरों जैसी चुनौतियों को प्राथमिकता दी और ठोस कदम उठाए, जो यह सिद्ध करते हैं कि युवा राज्य की प्राथमिक पूँजी हैं। रोजगार नीति 2025, कौशल विकास नीति 2025 और युवा नीति जैसे व्यापक दस्तावेज़ों के माध्यम से सरकार ने शिक्षा से रोजगार तक की पूरी श्रृंखला को एकीकृत कर दिया है, जिससे लाखों युवाओं के सपनों को पंख लगने लगे हैं।

राजस्थान सरकार की सोच में मूलभूत परिवर्तन आया है, जहाँ युवा को अब केवल नौकरी का इंतजार करने वाला नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर उद्यमी, नवाचारी और सामाजिक परिवर्तनकर्ता के रूप में देखा जा रहा है। पहले की नीतियाँ अक्सर विभागों तक सीमित रहती थीं, लेकिन अब समग्र दृष्टिकोण अपनाते हुए शिक्षा, उद्योग, स्टार्टअप और सामाजिक विकास को जोड़ा गया है। सरकार ने स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किए हैं पाँच वर्षों में 10 लाख नई नौकरियाँ सृजित करना, 20 लाख युवाओं को कौशल प्रशिक्षण देना और स्टार्टअप इकोसिस्टम को दोगुना करना जो न केवल घोषणाएँ हैं, बल्कि बजट प्रावधानों और क्रियान्वयन तंत्र के साथ बँधे हुए हैं। यह बदलाव सराहनीय है क्योंकि यह युवा आबादी को बोझ से पूँजी में बदलने की रणनीति है।

कौशल विकास के क्षेत्र में राजस्थान सरकार के प्रयास प्रगतिशील और भविष्योन्मुखी हैं। कौशल विकास नीति 2025 के तहत 500 से अधिक नए स्किल सेंटर स्थापित किए जा रहे हैं, जहाँ एआई, डेटा साइंस, साइबर सिक्योरिटी, इलेक्ट्रिक व्हीकल टेक्नोलॉजी, सोलर एनर्जी और डिजिटल मार्केटिंग जैसे उभरते क्षेत्रों पर फोकस है। सरकार ने उद्योग भागीदारों के साथ 200 से अधिक मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग साइन किए हैं, जिससे प्रशिक्षण 80 प्रतिशत प्लेसमेंट से जुड़ा है। ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल स्किल वैन और महिलाओं के लिए विशेष बैच चलाए जा रहे हैं, जो सामाजिक समावेश को सुनिश्चित करते हैं। हाल ही में आयोजित क्षेत्रीय एआई प्रभाव सम्मेलन में एक लाख युवाओं को एआई प्रशिक्षण देने का ऐलान सराहनीय है, जो राजस्थान को डिजिटल अर्थव्यवस्था का हब बनाने की दिशा में मील का पत्थर है।

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत, लोक कलाएँ, लोकसाहित्य और इतिहास भी युवाओं के लिए प्रेरणा और आत्मसम्मान का स्त्रोत बन सकते हैं। यदि नीतियाँ इस बात का ध्यान रखें कि युवा केवल आर्थिक इकाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक वाहक भी है, तो उसे अपने प्रदेश और परंपरा से जुड़ने के ज्यादा अवसर मिलेंगे। विरासत पर्यटन, लोककला आधारित उद्यम, ग्रामीण और रेगिस्तानी क्षेत्रों में सांस्कृतिक इको पर्यटन जैसी अवधारणाएँ युवाओं को स्थानीय स्तर पर ही रोजगार, उद्यम और गौरव, तीनों दे सकती हैं। इससे पलायन कम हो सकता है और गाँव-कस्बों में भी नई आर्थिक ऊर्जा का संचार हो सकता है।

कौशल विकास के क्षेत्र में राजस्थान सरकार के प्रयास प्रगतिशील और भविष्योन्मुखी हैं। राजस्थान सरकार ने सिद्ध कर दिया है कि मजबूत नेतृत्व और स्पष्ट विजन से युवा शक्ति को सही दिशा दी जा सकती है। ये नीतियाँ न केवल राजस्थान को समृद्ध बना रही हैं, बल्कि युवाओं को वैश्विक पटल पर प्रतिस्पर्धी बना रही हैं।

रोजगार सृजन में सरकार की दोहरी रणनीति अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो रही है। एक ओर 1.5 लाख सरकारी रिक्तियों को भरने के लिए तेज भर्ती प्रक्रिया शुरू की गई है, जिसमें ऑनलाइन आवेदन, पारदर्शी परीक्षा और त्वरित परिणाम सुनिश्चित किए गए हैं। दूसरी ओर, रोजगार नीति 2025 के तहत निवेश आकर्षित करने से 5 लाख निजी क्षेत्र की नौकरियाँ सृजित होने का लक्ष्य है, जिसमें स्थानीय युवाओं को 75 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित है। युवा मित्र योजना का पुनरुद्धार 21 हजार युवाओं को सामुदायिक स्तर पर कार्यरत करने के लिए किया गया, जो ठाामीण विकास में उनकी भूमिका बढ़ाता है। ये कदम न केवल बेरोजगारी दर घटाने में सहायक हैं, बल्कि युवाओं में आत्मविश्वास का संचार भी कर रहे हैं।

स्टार्टअप और उद्यमिता को बढ़ावा देने में राजस्थान सरकार अग्रणी भूमिका निभा रही है। स्टार्टअप फंड में 500 करोड़ का प्रावधान, इनक्यूबेशन सेंटर्स का विस्तार और आई-स्टार्ट जैसे कार्यक्रमों से 10 हजार नए स्टार्टअप उभर रहे हैं। विशेष रूप से एमएसएमई और ठाामीण उद्यमों के लिए सस्ते ऋण, टैक्स छूट और मार्केट लिंकेज प्रदान किए जा रहे हैं, जिससे महिलाओं और पिछड़े वर्गों के युवा उद्यमी बन रहे हैं। सरकार का वन डिस्ट्रिक्ट-वन प्रोडक्ट दृष्टिकोण लोककला, हस्तशिल्प और कृषि-आधारित स्टार्टअप को बढ़ावा दे रहा है, जो राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत को आर्थिक शक्ति में बदल रहा है।

सामाजिक और नैतिक विकास के प्रति सरकार की संवेदनशीलता भी उल्लेखनीय है। नशामुक्ति के लिए 100 नए केंद्र, विश्वविद्यालयों में नई किरण कार्यक्रम और युवा महोत्सवों के माध्यम से लाखों युवाओं को सकारात्मक दिशा दी जा रही है। खेलो इंडिया और सांस्कृतिक आदान-प्रदान योजनाओं से युवाओं में नेतृत्व क्षमता विकसित हो रही है। पर्यावरण संरक्षण और जल प्रबंधन में युवा स्वयंसेवकों की भागीदारी बढ़ाकर सरकार उन्हें जिम्मेदार नागरिक बना रही है।

डिजिटल शासन में राजस्थान सरकार का योगदान प्रशंसनीय है। एकीकृत पोर्टल के माध्यम से योजनाओं का लाभ सीधे लाभार्थी तक पहुँच रहा है, जिससे भ्रष्टाचार कम हुआ है और पारदर्शिता बढ़ी है। ग्रामीण इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल साक्षरता अभियान से दूरस्थ युवा भी मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं।

सरकार की ये नीतियाँ क्रियान्वयन स्तर पर भी मजबूत हैं। समयबद्ध मॉनिटरिंग, थर्ड-पार्टी ऑडिट और फीडबैक तंत्र से सुधार निरंतर हो रहे हैं। चुनौतियाँ स्वाभाविक हैं, लेकिन सरकार का सक्रिय दृष्टिकोण जैसे भर्ती में सुधार और प्लेसमेंट कैंप समस्याओं का समाधान दर्शाता है।

राजस्थान सरकार ने सिद्ध कर दिया है कि मजबूत नेतृत्व और स्पष्ट विजन से युवा शक्ति को सही दिशा दी जा सकती है। ये नीतियाँ न केवल राजस्थान को समृद्ध बना रही हैं, बल्कि युवाओं को वैश्विक पटल पर प्रतिस्पर्धी बना रही हैं। युवाओं को अब सरकार के इस समर्थन पर भरोसा कर आगे बढ़ना चाहिए, क्योंकि नया दौर और नई नीतियाँ उनके उज्ज्वल भविष्य की गारंटी हैं।

आख़िरकार, नई नीतियाँ और नया दौर तभी सार्थक होंगे जब वे केवल हुकूमत की भाषा न रहकर जनजीवन का अनुभव बन जाएँ। राजस्थान का युवा यदि अपने भीतर आत्मविश्वास, जिज्ञासा, संवेदनशीलता और साहस को जगाए, और सरकार यदि ईमानदारी, पारदर्शिता और दूरदृष्टि के साथ उसके साथ खड़ी रहे, तो यह साझेदारी राज्य को नए सामाजिकआर्थिक संस्कार की दिशा में ले जा सकती है। बदलती सरकारी सोच और जागरूक, सक्रिय, रचनात्मक युवा-इन दोनों की संयुक्त ऊर्जा ही राजस्थान के भविष्य की असली पूँजी है। यहाँ से आगे का रास्ता न केवल नीतियों की गुणवत्ता से तय होगा, बल्कि इस बात से भी कि युवा और व्यवस्था मिलकर कितनी गहराई से एकदूसरे पर भरोसा कर पाते हैं।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

रेत, रिस्क और रिस्पॉन्स: राजस्थान की महिलाएं क्लाइमेट फ्रंटलाइन पर

मणिमाला शर्मा

थार की तपिश में भी महिलाएं हार नहीं मानती हैं। गर्म हवाओं और सूखे के बीच वे उम्मीद और समाधान की नई उड़ान भर रहीं हैं। राजस्थान का रेगिस्तान हमेशा से कठोर रहा है। तेज़ धूप, कम बारिश और लगातार बदलते मौसम ने यहां की जिंदगी को चुनौतीपूर्ण बनाया है। पिछले कुछ वर्षों में जलवायु परिवर्तन के कारण बारिश असंगठित हो गई है, गर्मी की अवधि लंबी और तीव्र हो गई है और पारंपरिक आजीविकाएं अब अनिश्चित हो चुकी हैं। इन बदलावों का सबसे पहला और गहरा असर सीधे-सीधे ग्रामीण महिलाओं पर पड़ता है, क्योंकि पानी, ईंधन, खाना और परिवार की जिम्मेदारियों का बोझ सबसे अधिक उनके कंधों पर होता है। लेकिन यही महिलाएं अब थार के बदलते मौसम की सिर्फ पीड़ित नहीं रहीं हैं। वे अब इन परिस्थितियों से जूझकर अपने जीवन में समाधान का हिस्सा बन रही हैं। राजस्थान के अलग-अलग इलाकों में महिलाएं सौर ऊर्जा, पारंपरिक टिकाऊ आजीविकाओं और स्थानीय नेतृत्व के माध्यम से जलवायु अनुकूल बदलाव ला रही हैं। उनकी कहानी बताती है कि चुनौती जितनी बड़ी हो, उम्मीद और हिम्मत उससे कहीं ज्यादा मजबूत हो सकती है।

राजस्थान में बढ़ता तापमान अब केवल मौसम की खबर नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक संकट बन चुका है। पिछले दशकों में राज्य के कई हिस्सों में औसत अधिकतम और न्यूनतम तापमान लगातार बढ़ा है। गर्मी अब मार्च से शुरू होकर सितंबर तक खिंच जाती है। हीटवेव के दिनों में खेतों में काम करना मुश्किल हो जाता है, स्कूलों में उपस्थिति घटती है और स्वास्थ्य संबंधी जोखिम बढ़ जाते हैं।

महिलाओं पर इसका सबसे गहरा असर पड़ता है। खेतों, पशुपालन और घरेलू काम को वे तेज़ गर्मी में भी संभाल लेती हैं। लेकिन इससे बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है, लड़कियों का स्कूल ड्रॉपआउट बढ़ता है और घर में बढ़ते काम के साथ उनकी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। इसी वजह से स्थानीय, जलवायु अनुकूल आजीविकाएं जैसे सौर ऊर्जा, हथकरघा, ऊंट पालन आदि कार्य महिलाओं के लिए सिर्फ विकल्प नहीं, बल्कि जरूरत बन गए हैं। यहाँ हम ऐसी ही कुछ महिलाओं की कहानी जानेंगे जिन्होंने राजस्थान में जलवायु परिवर्तन को धत्ता बताते हुए अपनी आजीविका का नया ज़रिया तैयार किया है।

1. सोलर मामा - अजमेर जिले के तिलोनिया गांव की सोलर मामा महिलाएं जलवायु समाधान की सबसे जीवंत मिसाल हैं। पहले केरोसिन लालटेन और डीज़ल जनरेटर आम थे, लेकिन अब ये महिलाएं सौर ऊर्जा सिस्टम लगाकर गांव को रोशन कर रही हैं। वे न सिर्फ बिजली पहुंचाती हैं, बल्कि सिस्टम की मरम्मत भी करती हैं। इससे कार्बन उत्सर्जन कम होता है, आय स्थिर होती है और महिलाओं का सामाजिक सम्मान बढ़ता है।

2. हथकरघा- उदयपुर और आसपास के आदिवासी इलाकों में हथकरघा सिर्फ परंपरा नहीं, बल्कि जलवायु के अनुकूल उत्पादन प्रणाली है। मशीनों और रासायनिक रंगों के बजाय हाथ से बुना कपड़ा और प्राकृतिक रंगाई कम पानी, कम बिजली और न्यूनतम प्रदूषण पर आधारित है। भील और मीणा समुदाय की महिलाएं अब अपने उत्पादों को शहरों तक सीधी पहुंच दे रही हैं।

3. ऊंट पालन- बाड़मेर के रेगिस्तानी इलाके में ऊंट सदियों से जलवायु के अनुकूल पशु रहा है। कम पानी में जीवित रहने वाला यह जानवर आज स्थायी आय का स्त्रोत बन गया है। स्वयं सहायता समूहों के जरिए महिलाएं ऊंट के दूध को संगठित तरीके से बाजार तक पहुंचा रही हैं। इससे परिवार की आय नियमित हुई है और महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता बढ़ी है।

4. पंचायत और पानी-- बाड़मेर और आसपास के जिलों में महिला सरपंच अब जल प्रबंधन को प्राथमिक मुद्दा बना रही हैं। पंचायत स्तर पर महिलाओं ने जल वितरण, टैंकर व्यवस्था और जागरूकता अभियान शुरू किए हैं।

जलवायु परिवर्तन के आंकड़े- राजस्थान जलवायु परिवर्तन की सबसे संवेदनशील राज्यों में है। पिछले 50 वर्षों में औसत तापमान लगभग 3.4 बढ़ा है। हीटवेव के दिन बढ़े हैं और मानसून असंगठित हो गया है। इससे सूखा प्रभावित जिलों की संख्या बढ़ी है और गांवों में महिलाओं को पानी लाने की दूरी पहले से लंबी हो गई है।

छोटे कदम, बड़ा असर- राजस्थान की ग्रामीण महिलाएं जलवायु संकट के बीच नए समाधान खोज रही हैं। सोलर लाइट, हथकरघा, ऊंट पालन, जल संरक्षण और पंचायत नेतृत्व जैसे प्रयास जीवन को टिकाऊ और सशक्त बना रहे हैं। चुनौतियां अभी खत्म नहीं हुई हैं, लेकिन यह तय है कि राजस्थान की महिलाएं अब सिर्फ संघर्ष की कहानी नहीं, बल्कि समाधान और नेतृत्व की मिसाल बन रही हैं।

–मणिमाला शर्मा,
वरिष्ठ पत्रकार

राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन करता है ''बीकानेर ऊँट उत्सव''

ऊँटों को समर्पित ''बीकानेर ऊँट उत्सव'' परंपरा, कला व रोमांच का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है

अंजलिका पंवार

राजस्थान की संस्कृति और जनजीवन में ऊँट अभिन्न हिस्सा है। जब थार की सुनहरी रेत पर सजे-धजे ऊँटों की कतारें कदमताल करती हैं और लोक संगीत की थाप हवाओं में गूंज उठती है, तब बीकानेर एक जीवंत उत्सव में बदल जाता है। 'रेगिस्तान का जहाज़' कहे जाने वाले ऊँटों को समर्पित ''बीकानेर ऊँट उत्सव'' न केवल राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन करता है, बल्कि परंपरा, कला और रोमांच का अद्भुत संगम भी प्रस्तुत करता है। यह तीन दिवसीय उत्सव देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों को राजस्थान की आत्मा से जोड़ने का अवसर देता है। ''बीकानेर ऊँट उत्सव'' 'रेगिस्तान के जहाज़' कहे जाने वाले ऊँटों को समर्पित एक वार्षिक उत्सव है, जो राजस्थान की सतह से जुड़ी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है।

''बीकानेर ऊँट उत्सव'' का आगाज़ कुछ इस तरह होगा :-पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित यह महोत्सव वर्ष 2026 में 9 जनवरी से 11 जनवरी तक बीकानेर, राजस्थान में आयोजित हो रहा है। महोत्सव की शुरुआत ऐतिहासिक जूनागढ़ किले से निकलने वाली सजे-धजे ऊँटों की भव्य शोभायात्रा से होगी, जो बीकानेर की मुख्य सड़कों से गुजरते हुए डॉ. करणी सिंह स्टेडियम में संपन्न होगी, जहाँ पारंपरिक आभूषणों और रंगीन वस्त्रों से सजे ऊँट तथा रंग-बिरंगे परिधानों में सजे उनके ऊँटपालक आकर्षण का केंद्र रहेंगे।

ये रहेंगी ''बीकानेर ऊँट उत्सव'' में मुख्य गतिविधियां :-''बीकानेर ऊँट उत्सव'' में ऐसी कई गतिविधियां हैं जो कि आपका ध्यानाकर्षण का केंद्र रहेंगी। महोत्सव के दौरान ऊँट दौड़, ऊँट नृत्य प्रदर्शन, ऊँट सजावट एवं फर कटिंग प्रतियोगिता, ऊँट दुहाई (दूध निकालने की पारंपरिक विधि) तथा ऊँट करतब जैसी गतिविधियाँ ऊँटों के सांस्कृतिक महत्व को उजागर करेंगी। इसके साथ ही, पारंपरिक राजस्थानी लोक नृत्य एवं संगीत प्रस्तुतियाँ होंगी, हस्तशिल्प बाजार में स्थानीय उत्पाद उपलब्ध होंगे और फूड कोर्ट में प्रामाणिक राजस्थानी व्यंजनों का स्वाद लिया जा सकेगा।

आयोजन स्थलों की जानकारी :- महोत्सव के प्रमुख आयोजन स्थल जूनागढ़ किला, करणी सिंह स्टेडियम, कैमल फार्म, रायसर सैंड ड्यून्स तथा बीकानेर का पुराना शहर हैं, सभी कार्यक्रम प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से रात 10 बजे तक आयोजित होंगे और प्रवेश सभी के लिए निःशुल्क रहेगा। आगंतुकों की सुविधा हेतु निकटतम हवाई अड्डा नाल है, जो बीकानेर से लगभग 20 किलोमीटर दूर स्थित है, जबकि बीकानेर रेलवे स्टेशन शहर के केंद्र से मात्र 1 किलोमीटर की दूरी पर है। अधिक जानकारी के लिए पर्यटक टूरिस्ट रिसेप्शन सेंटर, बीकानेर से फोन नंबर 0151-2226701 पर या ईमेल के माध्यम से संपर्क कर सकते हैं। यह महोत्सव राजस्थान की सांस्कृतिक समृद्धि और ऊँटों की ऐतिहासिक भूमिका को करीब से अनुभव करने का अनूठा अवसर प्रदान करता है।

अंजलिका पंवार,
एपीआरओ, डीआईपीआर

वंदे मातरम् और गणतंत्र का नैतिक धरातल

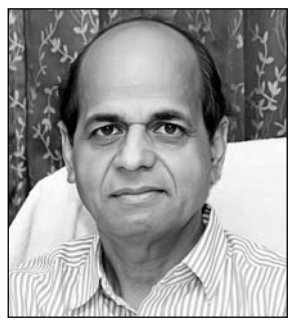

डॉ. कैलाश चन्द सैनी

वन्दे मातरम् केवल अतीत का गौरवगान नहीं, बल्कि हमारे गणतंत्र का नैतिक भविष्य है। आज जब राष्ट्रवाद अक्सर नारों और प्रदर्शन की भेंट चढ़ जाता है, तब यह पंक्तियां हमें याद दिलाती है कि मातृभूमि की वास्तविक वंदना सदनों की मर्यादा, नागरिक कत्तव्यों के पालन और आचरण की शुचिता में निहित है। डेढ़ शताब्दी की इस चेतना को 'उद्घोष' से 'किरदार' में बदलने का समय आ गया है।

भारतीय इतिहास के दीर्घ और बहुआयामी फलक पर कुछ शब्द ऐसे हैं जो केवल भाषा की संरचना नहीं रचते, बल्कि समय के साथ राष्ट्र की धड़कन में परिवर्तित हो जाते हैं। 'वन्दे मातरम्' ऐसा ही एक महामंत्र है, एक ऐसा उद्घोष है जिसने गत डेढ़ सौ वर्षों से भारत की सामूहिक चेतना को आलोकित, आंदोलित और दिशा प्रदान की है।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, सन् 1870 के दशक में बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के अंतर्मन से उपजा यह गीत किसी औपचारिक काव्य के प्रयास का परिणाम नहीं था। यह उस सुप्त राष्ट्रीय चेतना का ओजस्वी स्वर था, जो औपनिवेशिक दासता की बेड़ियों में जकड़े भारत को अपनी आत्मा को पहचानने का साहस दे रहा था। 1882 में प्रकाशित उनके उपन्यास आनंदमठ में समाहित यह गीत आगे चलकर केवल साहित्य नहीं रहा,यह स्वतंत्रता आंदोलन की आत्मा बन गया। वर्ष 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में जब पहली बार इसे सार्वजनिक मंच पर गाया गया, तब से लेकर 26 जनवरी, 1950 को संविधान के लागू होने तक, और उसके बाद भी, वन्दे मातरम् निरंतर भारत के आत्म-संवाद का केन्द्रीय सूत्र बना रहा। गणतंत्र दिवस के इस गौरवमयी अवसर पर यह गीत हमें स्मरण कराता है कि हमारा संविधान और हमारा राष्ट्रवाद किसी शून्य से साकार हुआ विचार नहीं है, बल्कि इसके पीछे डेढ़ शताब्दी का त्याग, तपस्या, संघर्ष और निरंतर चला आ रहा नैतिक मंथन निहित है।

संघर्ष से संविधान तक : पिछले 150 वर्षों में भारत का राजनीतिक मानचित्र ही नहीं शासन-प्रणालियाँ भी बदली हैं, लेकिन वन्दे मातरम् के अर्थ की गहराई और उसकी गरिमा आज भी अक्षुण्ण है। यह गीत उस कालखंड के दौरान आया जब 'भारत' एक सुसंगठित राष्ट्र नहीं, बल्कि औपनिवेशिक शोषण के अधीन बिखरी हुई इकाइयों का एक समूह था। इस गीत की सबसे बड़ी ऐतिहासिक भूमिका यह रही कि इसने एक भौगोलिक भूखंड को माता के रूप में प्रतिष्ठित किया। स्वाधीनता संग्राम के दौर में यह गीत फाँसी के फंदों पर झूलते क्रांतिकारियों का अमर उद्घोष बना। आज के संदर्भ में, वन्दे मातरम् का अर्थ केवल भारत माता की वंदना तक सीमित नहीं है, बल्कि उन संवैधानिक मूल्यों- न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुत्वकी सतत रक्षा का संकल्प है, जो हमारे संविधान की आत्मा है। विचारणीय है कि क्या वन्दे मातरम् का गायन मात्र एक औपचारिक रस्म बनकर रह गया है? जब हम सदनों के भीतर हमारे माननीयों के अशोभनीय आचरण, निरंतर शोर-शराबा, तख्तियां दिखाने और नारेबाजी के साथ सदन के 'वेल' में आकर कार्यवाही बाधित करने जैसे दृश्य देखते हैं, तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या ये हमारे वही प्रतिनिधि हैं, जो कुछ ही समय पूर्व राष्ट्रगीत के सम्मान में खड़े थे?

वन्दे मातरम् हमें अनुशासन, मर्यादा और राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च निष्ठा की शिक्षा देता है। सदनों के भीतर होने वाला अमर्यादित व्यवहार न केवल लोकतंत्र की गरिमा को धूमिल करता है, बल्कि उस महामंत्र की मूल भावना का भी तिरस्कार करता है, जिसे गाते हुए हमारे पूर्वजों ने लाठियाँ खाईं और कारावास स्वीकार किया। यदि नीतिगत विमर्श के स्थान पर वैयक्तिक आक्षेप और विखंडन की राजनीति हावी होगी, तो वन्दे मातरम् का उद्घोष अपनी नैतिक साख खोने लगेगा। जनप्रतिनिधियों का आचरण ही वास्तव में संविधान की शुचिता का वास्तविक मानक है।

राजस्थान : जहाँ शौर्य ही वंदन है : जब वन्दे मातरम् के स्वर अरावली की पर्वत-श्रृंखलाओं से साक्षात करते हैं, तो उनकी गूँज और अधिक गहरी हो जाती है। वीर प्रसविनी राजस्थान वह भूमि है, जिसने इस गीत के रचे जाने से सदियों पूर्व ही मातृभूमि की वंदना को अपने जीवन का मूल मंत्र बना लिया था। यहाँ राष्ट्रभक्ति कोई आयातित विचार नहीं, बल्कि माटी का स्वभाव है। चित्तौड़गढ़ के किले की प्राचीरें और हल्दीघाटी की माटी साक्षी हैं कि यहाँ के योद्धाओं ने सत्ता के आगे झुकने के बजाय घास की रोटियाँ खाना स्वीकार किया।

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का संघर्ष वस्तुतः वन्दे मातरम् की उसी भावना का मूर्त रूप है, जिसमें मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व समर्पित कर दिया जाता है। राजस्थान ने इतिहास के हर मोड़ पर यह सिद्ध किया है कि स्वाभिमान से बड़ा कोई संविधान नहीं होता। गणतंत्र दिवस पर राजस्थान का प्रत्येक दुर्ग हमें यह स्मरण कराता है कि स्वतंत्रता कोई उपहार नहीं थी यह डेढ़ शताब्दी तक रक्त और पसीने से सींची गई साधना का परिणाम है।

'सुजलां, सुफलां' और मरुधरा का जल-दर्शन : राष्ट्रीय गीत में प्रयुक्त 'सुजलां, सुफलां, मलयज शीतलां' के शब्द राजस्थान के संदर्भ में विशेष अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। जहाँ जल दुर्लभ है, वहाँ 'सुजलां' होने की आकांक्षा केवल काव्यात्मक कल्पना नहीं, बल्कि कठोर तपस्या है। बिश्नोई समाज और खेजड़ली का बलिदान यह सिखाता है कि मातृभूमि की रक्षा केवल सीमाओं की नहीं, बल्कि उसके नैसर्गिक स्वरूप की रक्षा भी है।

नारों से आगे आचरण की कसौटी : डेढ़ शताब्दी की इस लम्बी यात्रा में राष्ट्रवाद की परिभाषा और उसके स्वरूप में कई बदलाव आए हैं। आज के समय में, राष्ट्रप्रेम कई बार केवल प्रतीकों, प्रदर्शन और ऊँचे नारों की प्रदर्शनप्रियता तक सीमित होता प्रतीत होता है। गणतंत्र दिवस केवल एक वार्षिक उत्सव नहीं, बल्कि आत्ममंथन का विशेष अवसर है जहाँ हमें स्वयं से पूछना होगा कि क्या हमने वन्दे मातरम् को केवल एक औपचारिक गान या भावनात्मक उद्घोष बनाकर तो नहीं छोड़ दिया?

आज के जटिल वैश्विक परिवेश में, संवैधानिक शुचिता और नैतिक निष्ठा ही वास्तविक वन्दे मातरम् है। एक जीवंत गणतंत्र का वास्तविक अर्थ केवल सत्ता का हस्तांतरण नहीं, बल्कि दूसरों के अधिकारों के प्रति सहज सम्मान और अपने कत्तव्यों के प्रति अटूट सजगता है। जब एक नागरिक अपने कार्यस्थल पर ईमानदारी अपनाता है, जब एक जनप्रतिनिधि सदन की मर्यादा की रक्षा करता है और जब समाज का सक्षम वर्ग वंचितों के प्रति संवेदनशील होता है तभी वह सही अर्थों में इस मातृभूमि की वंदना कर रहा होता है। हमें यह समझना होगा कि राष्ट्र के प्रति हमारी भक्ति नारों की गूँज में नहीं, बल्कि हमारे चरित्र की शुद्धता और हमारे नागरिक आचरण की कसौटी पर जाँची जाएगी।

मंत्र से मर्यादा तक : वन्दे मातरम् अतीत का गौरवगान नहीं, भविष्य का मार्गदर्शक है। यह हमें सिखाता है कि राष्ट्र कोई भूमि का टुकड़ा नहीं, बल्कि वहाँ रहने वाले लोगों का आपसी विश्वास है। इस गणतंत्र दिवस पर सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी, जब हम इस गीत को अपने आचरण में उतारेंगे। विशेष रूप से जनप्रतिनिधियों के लिए यह अनिवार्य है कि सदनों में उनका व्यवहार उसी मर्यादा का प्रतीक बने, जिसकी प्रतिध्वनि वन्दे मातरम् में सुनाई देती है। जिस दिन हमारा आचरण हमारे उद्घोष के समान पवित्र होगा, अधिकारों से अधिक कत्तव्यों की चिंता होगी, और मरुधरा की माटी का प्रत्येक कण भ्रष्टाचार व भेदभाव से मुक्त होगा उसी दिन वन्दे मातरम् का स्वप्न पूर्णतः साकार होगा। आइए, इस गणतंत्र दिवस पर संकल्प लें कि हम इस डेढ़ शताब्दी पुराने मंत्र की गरिमा को अपने श्रम, अपनी संसदीय शुचिता और अपने नागरिक चरित्र से और ऊँचाई प्रदान करेंगे। जय हिन्द! जय राजस्थान!

- डॉ. कैलाश चन्द सैनी,
पूर्व मुख्य शोध एवं संदर्भ अधिकारी,
राजस्थान विधानसभा, जयपुर,

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 10 जनवरी, 2026

माघ मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, हस्त नक्षत्र दिन 3:40 तक, अतिगंड योग सायं 4:58 तक, बव करण प्रातः 8:24 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 4:53 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरू-मिथुन, शुक्र-धनु, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज यमघट योग सूर्योदय से दिन 3:40 तक रहेगा। आज सप्तमी तिथि में वृद्धि हुई है। आज कालाष्टमी है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ 8:40 से 9:58 तक, चर 12:34 से 1:52 तक, लाभ-अमृत 1: से 4:24 तक।

राहूकालः 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:47

मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि हो सकती है।

वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों में व्यवधान हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मीन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।